Paris Peace Conference (Part-3)

FOR:P.G.SEM-2,CC-6,UNIT-1

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA

सेंट जर्मे(St.Germain)की संधि

- 10 Dec.1919 को यह संधि मित्र राष्ट्र और ऑस्ट्रिया- हंगरी के बीच में पेरिस के समीप सेंट जर्मे नामक स्थान पर हुई।
- इसके द्वारा ऑस्ट्रिया हंगरी का साम्राज्य भंग कर दिया गया।ऑस्ट्रिया ने हंगरी, चेकोस्लोवाकिया ,पोलैंड और युगोस्लाविया की स्वतंत्रता को मान्यता दी।
- ऑस्ट्रिया में जर्मन चेक पोल् क्रीट,रुमानिया तथा इटैलियन आदि अनेक जातियां रहती थी अतः आत्म निर्णय के सिद्धांत के अनुसार इनको प्रदेश दिये गये।
- जर्मनी तथा ऑस्ट्रिया परस्पर राजनीतिक अथवा आर्थिक संगठन नहीं कर सकते थे ।
- साइलेशिया, बोहेमिया तथा मोराविया को मिलाकर चेकोस्लोवाकिया का निर्माण किया गया ।

सेंट जर्मे की संधि

- Austria को 30 हजार से अधिक सैनिक अपनी सेना में रखने का अधिकार नहीं रहा।
- Austria का नौसेना तथा हवाई सेना का अंत कर दिया गया
- Austria को भी निर्धारित क्षतिपूर्ति की राशि देनी थी तथा युद्ध अपराधी मित्र राष्ट्रों को सौंपने थे

नयी(Neuilly)की संधि

- यह संधि 27 नवंबर 1919 को बलगारिया के साथ हुई
- पश्चिम बलगारिया के चार छोटे-छोटे प्रदेश युगोस्लाविया को दे दिए गए इन प्रदेशों की जनता बल्गेरियन थी|
- थ्रेस का समुद्री तट यूनान को दे दिया गया ।
- बलगारिया कि सेना घटाकर 10 हजार निश्चित की गयी|
- ग्रीस तथा बलगारिया की सीमा इस संबंध में कुछ परिवर्तन किए गए|
- उसकी जल सेना समाप्त कर दी गई ।
- भारी युद्ध हर्जाना लादा गया ।

त्रिआनों(Trianon)की संधि

- यह संधि 4 जून 1920 को हंगरी के साथ की गई
- हंगरी को ऑस्ट्रिया से अलग कर दिया गया।
- क्रोशिया सर्बिया को दे दिया गया।
- स्लोवाकिया चेकोस्लोवाकिया को दे दिया गया।
- ट्रांसिलवेनिया रोमानिया को दे दिया गया।
- हंगरी को 35 हजार से अधिक सैनिक रखने का अधिकार न रहा।
- युद्ध हर्जाना लादा गया।

सेव्र(Sevres)की संधि

- 10 अगस्त 1920 को तुर्की के खलीफा के साथ हुई।
- तुर्की के साम्राज्य का अंत कर दिया गया ।तुर्की के खलीफा के पास एकमात्र अनातोलिया का पहाड़ी प्रदेश और कुस्तुनतुनिया के समीपवर्ती प्रदेश ही रहा।
- आर्मीनिया को स्वतंत्र कर दिया गया तथा कुर्दिस्तान को भी स्वतंत्र करने का भी आश्वासन दिया गया ।
- डाडेनेलीज तथा वास्फोरस के जल अंत रीपो का अंतरराष्ट्रीय करण कर दिया गया ।

सेव्र की संधि

- ग्रीस को थ्रेस, स्मर्ना ,एड्रियाटिक सागर के कुछ टापू तथा गेली पोलो के द्वीप दिये गये।
- तुर्की ने मिस्र, साइप्रस ,मोरक्को, ट्रिपोली,सीरिया, फिलीस्तीन, अरब तथा मेसोपोटामिया पर से अपने अधिकार छोड़ दिये।
- तुर्की की सैन्य संख्या 50 हजार निश्चित कर दी गई।

लूसान की संधि(1923)

- तुर्की की राष्ट्रीय दल के नेता मुस्तफा कमाल पाशा ने इस संधि को स्वीकार नहीं किया ।उसने ग्रीस की सेनाओं को पराजित कर भगा दिया। फलस्वरूप 1923 में मित्र राष्ट्र ने तुर्की की सरकार के साथ लूसान की संधि कीजिसमें निम्नलिखित संशोधन किए गए:

1. पूर्वी थेर्स, आर्मीनिया तथा स्मर्र्ना तुर्की को वापस मिल गये।
2. अपनी सीमा से बाहर के प्रदेशों तथा मेसोपोटामिया सीरिया, सूडान,अरब मिस्र,साइप्रस फिलीस्तीन पर तुर्की का कोई अधिकार ना रहा।
3. तुर्की को अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का आश्वासन देना पड़ा ।
4. तुर्की की सेना पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया तथा उससे हर्जाना भी नहीं मांगा गया।

विविध प्रतिक्रियाएं:

- पेरिस संधि का कहीं भी स्वागत नहीं हुआ सब को निराशा हाथ लगी।
- **फ्रांस**: इस संधि में सबसे अधिक ध्यान फ्रांस का रखा गया था परंतु क्लिमेंशों ने जब अनुमोदन के लिए फ्रांस की राष्ट्रीय सभा में प्रस्तुत किया तो दोनों सदनों ने ब्रिटेन एवं अमेरिका के समक्ष कायरता पूर्वक अपने राष्ट्रीय हितों को बलिदान करने का आरोप लगाया।
- **इंग्लैंड**: ब्रिटेन की संसद में लॉर्ड जॉर्ज की आलोचना हुई। उन पर अमेरिकी शांति वाद के सामने कठोर न्याय का बलिदान करने तथा फ्रांस को प्रसन्न करने के लिए जर्मनी पर विनाशकारी संधि लादने का आरोप लगाया

विविध प्रतिक्रियाएं

- **अमेरिका:** अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन शांति सम्मेलन में कठिन परिश्रम किया था फिर भी आलोचना से बच ना सके। अमेरिकी सीनेट में न केवल वर्साय संधि को नामंजूर किया बल्कि विल्सन की सर्वाधिक प्रिय वस्तु राष्ट्र संघ का सदस्य भी अमेरिका को नहीं बनने दिया।
- **इटली:** इटली संधि से नाखुश था उसे जो मिला वह उसे अपर्याप्त बतला रहा था । उसे केवल टेरेणिटना,टाइरोल तथा डालमेशिया का एक भाग मिला।

जर्मनी की शिकायतें

- पेरिस की व्यवस्था से सर्वाधिक प्रभावित देश जर्मनी था। जर्मन प्रतिनिधियों का कहना था कि जर्मनी ने विल्सन के14 सिद्धांतों के आधार पर युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर किए थे परंतु संधि की शर्तों में पूर्णतया इसका पालन नहीं किया गया।
- यह न्याय युक्त संधि नहीं है जर्मनी पर भारी हर जाने का बोझ लाद दिया गया है जिसके भारसे वह सदैव ही गुलाम बना रहेगा।
- समानता के आधार पर जर्मनी को भी राष्ट्र संघ का सदस्य बनाया जाना चाहिए ।
- जर्मनी को भौतिक ,आर्थिक, नैतिक सभी स्तरों पर नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई है।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- **आरोपित संधि:**1. संधि के मसौदे को तैयार करते समय जर्मनी के प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया गया।
- 2. संधि का आधार दो पक्षों के बीच विचारों का आदान प्रदान का अभाव था।
- 3. संधि पर विचार करने हेतु जर्मनी को केवल एक बार मौका दिया गया तथा जर्मनी द्‌वारा जो संशोधन प्रस्तुत किया गया उन्हें भी अस्वीकृत कर दिया गया।
- 4.यह विजेताओं द्‌वारा जबरदस्ती ला दी गई संधि थी।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- 5. इस संधि को इतिहास में *आरोपित शांति*(*Dictated Peace*) कहा गया है ।
- *प्रो.कार* के अनुसार वर्साय संधि में आरोप का भाव सभी शांति संधियों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट था।
- *प्रो.लेंगसम* के अनुसार पेरिस की संधि एक पक्षीय थी उनमें भविष्य के संघर्ष के बीज विद्धमान थे।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- **अपमानजनक संधि:**(Humiliating Treaty)-1. जर्मन प्रतिनिधियों को शांति सम्मेलन में नहीं बुलाया गया उनके साथ समानता का बर्ताव नहीं किया गया।
- 2. उसे राष्ट्र संघ का भी सदस्य नहीं बनाया गया।
- 3. जर्मन प्रतिनिधियों को नुकीले तारों से घिरे एक होटल में कैदियों की भांति ठहराया गया था।उन पर कड़ी निगरानी रखी गई। हस्ताक्षर करने के लिए उन्हें पहरे के साथ अपराधियों की भांति ले जाया गया जहां जनता ने उन पर ईंट पत्थर तथा गालियां दी थी।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

कठोर संधि .जर्मनी को यूरोपमें लगभग 28 हजार वर्ग मील के क्षेत्र से वंचित हो जाना पड़ा।

2. कच्चे लोहे के भंडार का 65% कोयला का 45% कच्चे जस्ता का 72% शीशे का 57% कृषि उत्पादन का 75% पर तैयार माल का लगभग 10% भाग से हाथ धोना पड़ा

3. जर्मनी के आर्थिक स्रोतों पर अधिकार कर लेने के पश्चात भी मित्र राष्ट्र ने जर्मनी पर क्षतिपर्ति की भारी रकम लाद दी। इस कठोरता के कारणे ही ब्रिटेन के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य कीन्स ने त्याग पत्र दे दिया था।

4. सैन्य कटौती बेल्जियम जैसे छोटे राज्य से भी कम कर दी गयी।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- **विश्वासघाती संधि** : जर्मनी ने विल्सन के सिद्धांत के आधार पर युद्ध विराम किया था किंतु संधि में इसका ख्याल नहीं रखा गया।
- 2. फ्रांस के द्वारा राइन प्रदेश पर अधिकार की चेष्टा, इटली के द्वारा डालमेशिया पर अधिकार करना तथा पोलैंड के द्वारा समस्त उतरी साइलेशिया का अपहरण इसके उदाहरण है।इसका परिणाम 20 वर्षों के बाद संसार को भुगतना पड़ा ।
- मार्शल फोच(फ्रांस) के अनुसार यह संधि नहीं बल्कि 20 वर्षीय युद्ध विराम संधि है ।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- प्रतिशोधात्मक संधि:1. मित्र राष्ट्र पराजित जर्मनी को इतना अधिक दबाना चाहते थे कि भविष्य में उन्हें कभी सर ना उठा सके।
- 2. क्लिमेंसो ने कहा था अब हमें बदला लेने का अवसर मिल गया है।
- 3. मित्र राष्ट्रों का दृष्टिकोण था हम कैसर को फांसी दे देगेतथा जर्मनी से युद्ध का पूरा हरजाना वसूल करेंगे।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- एकपक्षीय संधि:1. मित्र राष्ट्र ने बलपूर्वक संधि की शर्तों को जर्मनी पर लाद दिया था।
- 2. युद्धोंपरात दोनों पक्षों के बजाये जर्मन युद्ध अपराधियों पर ही अभियोग चलाया गए थे।
- 3. जर्मनी के उपनिवेश छीन लिए गए थे परंतु मित्र राष्ट्रों के पास बराबर उपनिवेश रहे।
- 4. जर्मनी का पूर्ण निशस्त्रीकरण कर दिया गया था परंतु अन्य राष्ट्रों की सेना व तथा हथियारों में कोई कमी नहींकी गयी
- 5. जर्मनी को राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बनाया गया था।

वर्साय संधि का मूल्यांकन

- जर्मनी ने इस संधि को अपना राष्ट्रीय अपमान माना तथा जर्मन जनता ने आगे चलकर एक-एक करके संधि की सभी शर्तों को तोड़ने का प्रयास किया। इसके बावजूद इस संधि का महत्व कम नहीं है ।इसने भविष्य में युद्ध टालने की दिशा में एक कदम उठाने की कोशिश की साथ ही विश्व में शांति स्थापित करने के लिए *राष्ट्र संघ* जैसी संस्था की नींव डाली।

- Thanks!!